मैथिली प्रतिष्ठा एवं अनिवार्य भाषा Part-I (1)

व्याख्यान संख्या – 5

Maithili, D I, Paper-III, Unit-3

Page No.:
Date: 14/04/2020

डॉ. अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा
मो.- 9040201409

मनबोधक 'कृष्णजन्म' मे बाल-गोपाल (शिशु) कविता एवं उत्कर भाषा।

मनबोध 'कृष्णजन्म' क रचयिताक रूपमे विख्यात छथि। हिनक समयक विषयमे विद्वान लोकनिमे मतभेद अछि। ई महाराज नरेन्द्र सिंहक समकालीन छलाह। डॉ. ग्रियर्सनक मते हिनक निधन 1788 ई. मे भेलनि।

मनबोधमे भाषा कवि कहल जाइत छथि। कृष्णजन्मक भाषा निस्सन्देह लोकभाषा थिक। एहिमे तद्भव आ देशज शब्दक अतिरिक्त मिथिलाक लोकोक्तिक प्रयोग प्रचुर भेल अछि। एकर लोकप्रियताक कारण अछि सहज-सरल भाषाक व्यवहार एवं मिथिलाक सामाजिक-धार्मिक संस्कारक सफल चित्रण।

कृष्णजन्म एक कथाकाव्य थिक जाहिमे कृष्णक बाललीलाक बड़ मनोकर्षक वर्णन भेल अछि। महाकवि मनबोध रचित 'कृष्णजन्म' मे दशम अध्यायमे भगवान श्रीकृष्णक बाल-लीलाक वर्णन भेल अछि। ओहि अंश के स्पष्ट वर्णन कएल गेल अछि।

"कतओक दिवस जखन बिति गेल।
हरि पुनु ठेहुनगर गोड़गर भेल॥
से कोन ठाम जतए नहि जाथि।
कए बेरि अंगनहु सँ बहराथि॥
डर उपर सँ धरि धरि आनि।
हरखथि हे सखि जसोमति रानि॥"

श्रीकृष्णा नट लीलाधारी

भगवान विभाहा कृष्णक एक बाल लीलाक वर्णन एतय भेल अछि। बाल कृष्णा थोड़ेक दिनक बाद जखन ओ किछु ठेहुनगर - गोड़गर भेलाह अर्थात इम्हर ओम्हर जाय चला भेलाह तखन अपन लीला प्रारम्भ कएलनि। अपन घर-आंगनक कोनो एहन स्थान नहि छल जतय ओ नहि जाइत छलाह। कतेको बेर तड ओ आंगनहु सँ बहरा जाथि। माँ यशोदा डेग (धरि) पकड़ि-पकड़ि क आंगन आनथि। कृष्णक एहि प्रकारक व्यवहार सँ माता यशोदा हर्षित होइत छथि।

"कए बेरि आगि हाथ सँ छीनु।
कए बेरि पकलाह नकला बीनु॥
कए बेरि साँप धरय पुनि जाथि।
कए बेरि चून दही बाटि खाथि॥
कौसल चलाथि नाहि कहु बाल।
जसोमति का भेल विषम जंजाल॥

माता यशोदा कतेको बेर आगि

हाथ सँ छीन लैत छलि कृष्ण आ कतेको बेर ओ नहि देखला पर थाक जाइत छलाह। कतेको बेर हाथ सँ साँप के पकड़ि लैत छथि। कतेको बेर चून के दही बुझि खा लैत छथि। भगवान कृष्णक

एहन सब चालि देखि के माय यशोदा तंग आबि गेल छथि किछुनका डर लागल रहैत छनि जे ई नटखट की कऽ लेताह।

"कहलन्हि सिखबइ हमरहि नाहि।
टाँग नाङिअ न कओ हम नाहि॥
मानिअ नहि रत दिन घर जीअ।
अहाँ हमर सभ केओ मेल छीअ॥
ई कहि बन्हलन्हि उखरि लगाए।
कहलन्हि घुम दिंग जाउ नं पराए॥"

माए कहलन्हि जे अहाँ हमरे सँ सिखबब, टाँग टूटत तऽ हमरा नहि कहब। अहाँ हमर बात नहि मानैत छी, अहाँ गाछबर मेल जाइत छी। एतबा कहि माए जशोदा बाल-कृष्णक डांर मे डोरी लगा उखराड़ि मे बान्हि देलन्हि। बजलीह आब पराउ तऽ अहाँ बान्हल रहू। उखरि मे बन्हलाक बाद जशोदा अपन काज मे लागि गेलीह।

"मोहि निसंक समय हरि पाओल।
मरि मरि पांव उखरि अघराओल॥
गुड़कल गुड़कल निकसल जाए।
जमल अछल दुइ बिटै अकाय॥
जमला अर्जुन कहला - नाय।
जुगाति उपारल छुटल नहाय॥"

माएक निसंक भेल पर हाथ सँ उखरि के ओघरावय लगलाह। उखरि गोल-गोल घुमैत दूर धरि आबि गेला। बाहर आंगन मे दूटा विशाल गाछ छल। महाकवि श्री भगवान कृष्णक नटा रूपहा मात्र सँ स्वास पड़ला। कथा अछि जे